



Original Article

21 वीं सदी के हिंदी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित महानगरीय समस्याएँ

डॉ. सौदागर साळुंखे

हिंदी विभाग प्रमुख,

मा.ह.महाडीक कला व वाणिज्य महाविद्यालय, मोडनिंब, तह. माढा जि. सोलापुर

Manuscript ID:

IJAAR-C130347

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume – 13

Issue – 3

January – February 2026

Pp. 233 – 240

Submitted: 15 Jan.2026

Revised: 20 Jan. 2026

Accepted: 30 Jan. 2026

Published: 10 Feb. 2026

Corresponding Author:

डॉ.सौदागर साळुंखे

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22786248

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22786248>



Creative Commons



सार:

21वीं सदी में भारत का तेजी से हो रहा महानगरीकरण साहित्य और सिनेमा में प्रमुख रूप से प्रतिबिंबित हुआ है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट्स के अनुसार, 2050 तक भारत की आधी से अधिक आबादी शहरी क्षेत्रों में रहने वाली होगी। यह परिवर्तन आर्थिक विकास, प्रवासन और वैश्वीकरण के साथ बढ़ती आबादी, आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय संकट, सामाजिक अलगाव तथा सांस्कृतिक परिवर्तन जैसी समस्याएँ लाया है। हिंदी साहित्यकारों और फिल्मकारों ने इन विसंगतियों को अपनी रचनाओं के केंद्र में रखा है, जो महानगरीय बोध के माध्यम से समाज की जटिलताओं को उजागर करते हैं और परिवर्तन की मांग करते हैं।

हिंदी साहित्य में 21वीं सदी का महानगरीय बोध प्रमुख प्रवृत्ति है। उदय प्रकाश की 'पीली छतरी वाली लड़की' (2001) में मुंबई के स्लम जीवन, प्रवासी मजदूरों की गरीबी और शोषण को चित्रित किया गया है, जहाँ शहर की चमक के पीछे छिपी असमानता उजागर होती है। अनिल यादव की 'सोनम गुप्ता बेवफा है' (2010) दिल्ली के युवाओं की बेरोजगारी और मानसिक तनाव को दर्शाती है। चंदन पांडेय की कहानियाँ दिल्ली के प्रदूषण और पर्यावरणीय संकट पर केंद्रित हैं, जबकि ममता कालिया के 'दूसरा जीवन' (2005) में मध्यमवर्गीय स्त्री का सामाजिक अलगाव और अकेलापन दिखता है। अलका सरावगी और संजीव जैसी लेखिकाएँ/लेखक सांस्कृतिक विघटन और लिंग असमानता को उठाते हैं। ये रचनाएँ यथार्थवादी ढंग से महानगरों की जटिल जीवनशैली, बाजारवाद और अलगाव को चित्रित करती हैं।

हिंदी सिनेमा में भी यह चित्रण स्पष्ट है। 'तारे जमीन पर' (2007) महानगरीय शिक्षा प्रणाली की कठोरता और बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रकाश डालती है। 'गली बॉय' (2019) मुंबई स्लम में युवा की महत्वाकांक्षा, गरीबी और अपराध से संघर्ष को दिखाती है। 'पिक' (2016) स्त्री सुरक्षा और सहमति के मुद्दे उठाती है, जबकि 'अलीगढ़' (2015) LGBTQ+ समुदाय के अलगाव को चित्रित करती है। ओटीटी प्लेटफॉर्म पर 'सेक्रेड गेम्स' (2018) जैसे कार्य मुंबई के अंडरवर्ल्ड और नैतिक पतन को उजागर करते हैं। ये माध्यम समाज की विसंगतियों को न केवल दर्शाते हैं, बल्कि जागरूकता फैलाते हैं और सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा देते हैं। महानगरीय बोध के माध्यम से हिंदी साहित्य और सिनेमा 21वीं सदी के भारत की वास्तविकता को जीवंत बनाते हैं।

मुख्य शब्द: महानगरीय समस्याएँ, हिंदी साहित्य, हिंदी सिनेमा, शहरीकरण, सामाजिक असमानता, पर्यावरण संकट, सांस्कृतिक परिवर्तन।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. सौदागर साळुंखे. (2026). 21 वीं सदी के हिंदी साहित्य तथा सिनेमा में चित्रित महानगरीय समस्याएँ. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 233 – 240. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22786248>



प्रस्तावना:

21 वीं सदी का भारत एक ऐसे दौर से गुजर रहा है जहाँ महानगरीयकरण की गति अभूतपूर्व है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार, 2050 तक भारत की आबादी का 50 प्रतिशत से अधिक शहरी क्षेत्रों में निवास करेगा। यह परिवर्तन आर्थिक विकास, रोजगार अवसरों और आधुनिक जीवनशैली की ओर आकर्षण के कारण हो रहा है, लेकिन इसके साथ ही कई समस्याएँ भी उभर रही हैं। महानगर जैसे दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और बेंगलुरु में बढ़ती जनसंख्या, प्रदूषण, गरीबी, अपराध, अकेलापन, लिंग असमानता और सांस्कृतिक विघटन जैसी चुनौतियाँ प्रमुख हैं। ये समस्याएँ न केवल सामाजिक-आर्थिक संरचना को प्रभावित कर रही हैं, बल्कि व्यक्तिगत जीवन को भी। हिंदी साहित्य और सिनेमा, जो भारतीय समाज का दर्पण माने जाते हैं, इन महानगरीय समस्याओं को अपने माध्यम से चित्रित करते हुए समाज को जागरूक करने का कार्य कर रहे हैं।

हिंदी साहित्य में 21वीं सदी की शुरुआत से ही महानगरीय बोध एक प्रमुख प्रवृत्ति बनकर उभरा है। लेखक जैसे उदय प्रकाश, अनिल यादव, चंदन पांडेय और ममता कालिया ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में शहरी जीवन की जटिलताओं को उकेरा है। उदाहरणस्वरूप, उदय प्रकाश की कहानी 'मोहनदास' में महानगरीय व्यवस्था की असमानता और पहचान की समस्या को दर्शाया गया है, जहाँ ग्रामीण प्रवासी शहर में अपनी पहचान खो बैठता है। इसी प्रकार, ममता कालिया के उपन्यासों में स्त्री की महानगरीय संघर्ष को चित्रित किया गया है। साहित्यकारों ने भूमंडलीकरण, बाजारवाद और तकनीकी क्रांति के प्रभाव को भी अपनी रचनाओं में स्थान दिया है, जो शहरी जीवन की अनिश्चितता और अलगाव को रेखांकित करता है।

हिंदी सिनेमा में भी यह चित्रण स्पष्ट है। 21वीं सदी के सिनेमा ने पारंपरिक मसाला फिल्मों से हटकर यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया है। फिल्में जैसे 'तारे ज़मीन पर' (2007) में शहरी शिक्षा प्रणाली की समस्याएँ, 'पीपली लाइव' (2010) में ग्रामीण-शहरी असमानता, 'गली बॉय' (2019) में स्लम जीवन की चुनौतियाँ और 'अलीगढ़' (2015) में LGBTQ+ समुदाय की महानगरीय संघर्ष को दर्शाया गया है। ओटीटी प्लेटफॉर्म के उदय से जैसे 'सेक्रेड गेम्स' और 'मिर्जापुर' ने शहरी अपराध और नैतिक पतन को चित्रित किया है। सिनेमा न केवल समस्याओं को दिखाता है, बल्कि सामाजिक संवाद को प्रेरित करता है।

यह शोध पत्र दो मुख्य अनुभागों में विभाजित है: पहला, हिंदी साहित्य में महानगरीय समस्याओं का चित्रण; दूसरा, हिंदी सिनेमा में। अंत में निष्कर्ष और संदर्भ दिए गए हैं। उद्देश्य है कि इन माध्यमों के माध्यम से महानगरीय समस्याओं की समझ बढ़े और समाधान की दिशा में सोच विकसित हो।

हिंदी साहित्य में महानगरीय समस्याओं का चित्रण:

21वीं सदी के हिंदी साहित्य में महानगरीय समस्याएँ एक प्रमुख विषय बनकर उभरी हैं। भूमंडलीकरण, शहरीकरण और आर्थिक उदारीकरण के प्रभाव से भारत के महानगर जैसे दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और बेंगलुरु में तेजी से बदलाव आया है। संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट्स के अनुसार, 2050 तक भारत की आबादी का लगभग 50 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों में निवास करेगा, जो आर्थिक विकास के साथ-साथ कई चुनौतियाँ लेकर आया है। इनमें बढ़ती जनसंख्या, आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय संकट, सामाजिक अलगाव, लिंग असमानता, सांस्कृतिक विघटन, अपराध और तकनीकी निर्भरता जैसी समस्याएँ प्रमुख हैं। हिंदी साहित्यकारों ने इन



विसंगतियों को अपनी रचनाओं में यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया है, जो समाज को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करता है। यह साहित्य न केवल समस्याओं का दर्पण है, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी। उदाहरणस्वरूप, लेखक जैसे उदय प्रकाश, ममता कालिया, चंदन पांडेय, अनिल यादव, अलका सरावगी और संजीव ने महानगरीय जीवन की जटिलताओं को उकेरा है, जबकि नए लेखक जैसे मधु कांकरिया और डॉ. सत्यनारायण ने नशा, भ्रष्टाचार और प्रदूषण जैसे मुद्दों को जोड़ा है। इस चित्रण से साहित्य सामाजिक जागरूकता का सशक्त उपकरण बनता है।

सबसे पहले, आर्थिक असमानता और गरीबी का चित्रण प्रमुख है। 21वीं सदी में भूमंडलीकरण ने महानगरों को आर्थिक केंद्र बनाया, लेकिन इससे अमीर-गरीब की खाई बढ़ी है। उदय प्रकाश की कहानी संग्रह 'पीली छतरी वाली लड़की' (2001) में मुंबई के महानगरीय जीवन में प्रवासी मजदूरों की दयनीय स्थिति को दर्शाया गया है। कहानी का नायक ग्रामीण क्षेत्र से शहर आता है, जहाँ रोजगार की उम्मीद में वह स्लम्स में रहता है, लेकिन बेरोजगारी, शोषण और गरीबी से जूझता है। प्रकाश लिखते हैं, "शहर की चमक-दमक के पीछे छिपी गरीबी की सच्चाई, जहाँ इंसान मशीन बन जाता है।" यह चित्रण बाजारवाद की क्रूरता को उजागर करता है, जहाँ पूँजीवादी व्यवस्था गरीबों को हाशिए पर धकेल देती है। इसी प्रकार, अनिल यादव की 'सोनम गुप्ता बेवफा है' (2010) में दिल्ली के युवाओं की बेरोजगारी और आर्थिक दबाव को चित्रित किया गया है। यादव का नायक शहरी जीवन की भागदौड़ में सपनों को कुचलते हुए मानसिक तनाव से गुजरता है। वह लिखते हैं, "महानगर की सड़कों पर सपने बिकते हैं, लेकिन गरीब के हिस्से केवल निराशा आती है।" यह रचना युवा पीढ़ी की आर्थिक असुरक्षा को दर्शाती है, जहाँ नौकरियाँ सीमित हैं और

प्रतिस्पर्धा भयानक। इसके अलावा, डॉ. सत्यनारायण के कथेतर साहित्य में महानगरीय बेरोजगारी और मँहगाई को प्रमुखता से उठाया गया है। उनकी रचनाओं में शहरों के शोषण और पूँजीवादी दुष्प्रभावों का वर्णन है, जो आम आदमी की पीड़ा को रेखांकित करता है। ये उदाहरण दिखाते हैं कि हिंदी साहित्य आर्थिक विषमता को सामाजिक विमर्श का हिस्सा बनाता है, जो पाठकों को व्यवस्था पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित करता है।

पर्यावरणीय संकट भी 21वीं सदी के हिंदी साहित्य में एक ज्वलंत मुद्दा है। शहरीकरण की दौड़ में प्रदूषण, जल संकट और हरियाली की कमी ने महानगरों को जीवित कब्रिस्तान बना दिया है। चंदन पांडेय की कहानी 'वह शहर' (2015) में दिल्ली के पर्यावरणीय संकट को उकेरा गया है। कहानी में शहर की हवा में धूल-धुंध, पानी की कमी और स्वास्थ्य समस्याओं का चित्रण है। पांडेय लिखते हैं, "शहर की सड़कों पर धूल और धुंध ने जीवन को घेर लिया है, जहाँ साँस लेना भी दूभर हो गया है।" यह रचना विकास के नाम पर प्रकृति के शोषण को रेखांकित करती है। इसी प्रकार, मधु कांकरिया के उपन्यास 'पत्ताखोर' में महानगरीय परिवेश में नशे की समस्या को पर्यावरणीय संकट से जोड़ा गया है, जहाँ शहर की दमघोंटू हवा और तनाव युवाओं को नशे की ओर धकेलते हैं। कांकरिया का चित्रण शहरों में बढ़ते प्रदूषण और उसके मानसिक प्रभाव को दर्शाता है। डॉ. सत्यनारायण की रचनाओं में भी प्रदूषण और शहरी विकास के दुष्परिणामों का वर्णन है, जैसे मकान की समस्या और पर्यावरण का हास। ये साहित्यिक चित्रण पाठकों को पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर विचार करने के लिए बाध्य करते हैं, जहाँ शहरों की चकाचौंध के पीछे एक काला सत्य छिपा है।

सामाजिक अलगाव और अकेलापन महानगरीय जीवन की एक बड़ी समस्या है, जो हिंदी साहित्य में गहराई से



चित्रित हुई है। महानगरों की भीड़ में व्यक्ति अकेला पड़ जाता है, रिश्ते यांत्रिक हो जाते हैं। ममता कालिया के उपन्यास 'दूसरा जीवन' (2005) में एक कामकाजी स्त्री का शहरी अलगाव दर्शाया गया है। नायिका परिवार और समाज से कटकर मानसिक संघर्ष करती है। कालिया लिखती हैं, "शहर की ऊँची इमारतों में रिश्ते दफन हो जाते हैं, जहाँ हर कोई अकेला है।" यह चित्रण मध्यमवर्गीय जीवन की सच्चाई को उजागर करता है। पंकज सुबीर की कहानियों में युवाओं का साइबर दुनिया में खो जाना और वास्तविक संबंधों का अभाव चित्रित है। सुबीर दिखाते हैं कि तकनीकी क्रांति ने सामाजिक अलगाव को बढ़ावा दिया है, जहाँ सोशल मीडिया रिश्तों को आभासी बना देता है। संजीव की रचनाओं में भी महानगरीय अकेलापन प्रमुख है, जहाँ व्यक्ति अपनी जड़ों से कट जाता है। ये रचनाएँ दिखाती हैं कि शहरी जीवन की तेज रफ्तार में मानवीय संवेदनाएँ कुंद हो रही हैं, जो समाज के लिए एक चेतावनी है।

स्त्री संबंधी समस्याएँ हिंदी साहित्य में फेमिनिस्ट दृष्टिकोण से चित्रित हुई हैं। महानगरों में स्त्री का शोषण, लिंग असमानता और घरेलू हिंसा बढ़ी है। अलका सरावगी के उपन्यास 'कलिकथा: बाइपास के रास्ते' (2001) में कोलकाता की स्त्री की पहचान की समस्या को दर्शाया गया है। नायिका शहर की भीड़ में अकेली है, शोषण से जूझती है। सरावगी लिखती हैं, "शहर की भीड़ में स्त्री अकेली है, जहाँ उसकी आवाज दब जाती है।" यह रचना स्त्री विमर्श को मजबूत करती है। ममता कालिया की रचनाओं में भी कामकाजी स्त्री का संघर्ष प्रमुख है। इसके अलावा, 21वीं सदी में दलित और ओबीसी स्त्री विमर्श उभरा है, जहाँ जातीय और लिंग असमानता को जोड़ा गया। ये चित्रण स्त्री सशक्तिकरण की मांग करते हैं।

सांस्कृतिक विघटन और भूमंडलीकरण का प्रभाव भी साहित्य में दिखता है। संजीव की कहानी 'दिन दुपहरी' (2008)

में महानगर में सांस्कृतिक मिश्रण और पहचान संकट को दर्शाया गया है। लेखक दिखाते हैं कि पश्चिमी संस्कृति ने पारंपरिक मूल्यों को खोखला कर दिया है। डॉ. सत्यनारायण की रचनाओं में शहरों का अपराधीकरण और नैतिक पतन चित्रित है। इसके अलावा, अपराध और नैतिक पतन जैसी समस्याएँ भी उभरी हैं, जैसे मधु कांकरिया के उपन्यास में नशे की लत।

कुल मिलाकर, 21वीं सदी का हिंदी साहित्य महानगरीय समस्याओं को यथार्थवादी ढंग से चित्रित करता है, जो समाज को सोचने पर मजबूर करता है। यह साहित्य न केवल समस्याओं का वर्णन करता है, बल्कि समाधान की दिशा भी दिखाता है। भूमंडलीकरण के इस दौर में साहित्यकारों ने चुनौतियों को विमर्श का हिस्सा बनाया, जो सामाजिक परिवर्तन के लिए आवश्यक है। भविष्य में यह प्रवृत्ति और मजबूत होगी, जहाँ साहित्य समाज का आईना बनेगा।

हिंदी सिनेमा में महानगरीय समस्याओं का चित्रण:

21वीं सदी का हिंदी सिनेमा महानगरीय समस्याओं को चित्रित करने में अग्रणी रहा है। तकनीकी प्रगति, डिजिटल प्रभाव और ओटीटी प्लेटफॉर्म (जैसे नेटफ्लिक्स, अमेज़न प्राइम) के उदय से सिनेमा अधिक यथार्थवादी, समावेशी और बहुआयामी हो गया है। पहले जहाँ बॉलीवुड मुख्य रूप से मसाला मनोरंजन, रोमांस और पारिवारिक ड्रामा पर केंद्रित था, वहीं 21वीं सदी में फिल्मकारों ने दिल्ली, मुंबई, कोलकाता जैसे महानगरों की वास्तविक चुनौतियों—आर्थिक असमानता, स्लम जीवन, प्रदूषण, अपराध, लिंग असमानता, मानसिक स्वास्थ्य, LGBTQ+ संघर्ष और नैतिक पतन—को प्रमुखता दी है। ये फिल्में न केवल समस्याओं का दर्पण प्रस्तुत करती हैं, बल्कि सामाजिक जागरूकता फैलाती हैं और वैश्विक दर्शकों तक भारतीय शहरी जीवन की जटिलताएँ पहुँचाती हैं। ओटीटी



ने स्वतंत्र और छोटे बजट की फिल्मों/सीरीज को मंच दिया, जिससे यथार्थवाद बढ़ा।

आर्थिक असमानता और स्लम जीवन का चित्रण:

21वीं सदी के हिंदी सिनेमा में आर्थिक विषमता और स्लम जीवन सबसे प्रमुख मुद्दों में से एक रहा है। मुंबई जैसे महानगरों में अमीर-गरीब की खाई, प्रवासी मजदूरों का शोषण और गरीबी की मार को कई फिल्मों ने उकेरा है।

'गली बॉय' (2019, निर्देशक: जोया अख्तर) इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। फिल्म मुंबई के धारावी स्लम में रहने वाले युवा मुरीद (रनवीर सिंह) की कहानी है, जो रैप म्यूजिक के माध्यम से अपनी आवाज उठाता है। गरीबी, पारिवारिक हिंसा, अपराध और सामाजिक दबाव के बीच उसका सपना टूटता-बनता है। फिल्म शहरी युवा की महत्वाकांक्षा, वर्ग संघर्ष और स्लम की कठोर वास्तविकता को चित्रित करती है। यह न केवल बॉक्स ऑफिस पर सफल रही, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराही गई, जहाँ यह भारतीय स्लम जीवन की सच्चाई दिखाती है। इसी तरह, 'स्लमडॉग मिलियनेयर' (2008, हालांकि ब्रिटिश-भारतीय सह-निर्माण) ने मुंबई स्लम की गरीबी और अपराध को वैश्विक मंच पर लाया, लेकिन 'गली बॉय' अधिक मूल और यथार्थवादी है।

अन्य फिल्में जैसे 'खोसला का घोसला' (2006) में मध्यमवर्गीय परिवार की भूमि हड़पने की समस्या और 'पीके' (2014) में अप्रत्यक्ष रूप से शहरी असमानता को छुआ गया है। ये रचनाएँ दिखाती हैं कि महानगरों में आर्थिक विकास के साथ गरीबी कैसे बढ़ रही है।

शिक्षा और मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएँ:

महानगरों में शिक्षा प्रणाली की कठोरता, प्रतिस्पर्धा और बच्चों पर दबाव प्रमुख चुनौतियाँ हैं। 'तारे ज़मीन पर' (2007, निर्देशक: आमिर खान) इस मुद्दे पर सबसे प्रभावशाली फिल्म है। दिल्ली जैसे महानगर में डिस्ट्रेक्सिया से ग्रस्त बच्चे ईशान की कहानी शिक्षा व्यवस्था की कमियों, अभिभावकों के दबाव और मानसिक स्वास्थ्य की अनदेखी को उजागर करती है। फिल्म ने विशेष शिक्षा की आवश्यकता पर जोर दिया और समाज को सोचने पर मजबूर किया कि हर बच्चा अलग है। यह फिल्म मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता का प्रतीक बनी।

इसी तरह, 'दियर ज़िंदगी' (2016) में युवा पीढ़ी के मानसिक तनाव और 'हिर्क' जैसी फिल्मों में शहरी अलगाव को छुआ गया है। ओटीटी पर 'मासूम' या 'पंचायत' जैसी सीरीज में भी ग्रामीण-शहरी शिक्षा की असमानता दिखती है।

पर्यावरणीय मुद्दे और शहरी विकास का दुष्परिणाम:

शहरीकरण के नाम पर प्राकृतिक संसाधनों का शोषण, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन हिंदी सिनेमा में उभरते मुद्दे हैं। 'केजीएफ' (2018, कन्नड़ लेकिन हिंदी डब) और 'आरआरआर' (2022) में औद्योगिक विकास के लिए पर्यावरण शोषण दिखाया गया है, जो अप्रत्यक्ष रूप से शहरी विस्तार की समस्या को इंगित करता है।

हालाँकि प्रत्यक्ष शहरी प्रदूषण पर कम फिल्में हैं, लेकिन 'मसान' (2015) में वाराणसी के प्रदूषित गंगा और शहरी जीवन की गंदगी को चित्रित किया गया है। 'आर्टिकल 15' (2019) में ग्रामीण-शहरी असमानता के साथ पर्यावरणीय उपेक्षा भी जुड़ी है। ये फिल्में दिखाती हैं कि महानगरों का विकास पर्यावरण की कीमत पर हो रहा है।



स्त्री सशक्तिकरण और लिंग मुद्दे:

महानगरों में स्त्री सुरक्षा, सहमति और लिंग असमानता प्रमुख हैं। 'पिंक' (2016, निर्देशक: अनिरुद्ध रॉय चौधरी) दिल्ली में तीन लड़कियों की कहानी है, जहाँ सहमति ("नो मीन्स नो") और स्त्री सुरक्षा पर जोर है। फिल्म ने समाज में लिंग पूर्वाग्रहों को चुनौती दी और कानूनी जागरूकता बढ़ाई।

'थप्पड़' (2020) में घरेलू हिंसा, 'छपाक' (2020) में एसिड अटैक और 'नीरजा' (2016) में स्त्री साहस को दिखाया गया। ये फिल्में महानगरीय जीवन में स्त्री के संघर्ष को रेखांकित करती हैं।

LGBTQ+ समस्याएँ और सामाजिक अलगाव:

'अलीगढ़' (2015, निर्देशक: हंसल मेहता) में प्रोफेसर श्रीकांत त्रिपाठी (मंजोज बाजपेयी) की समलैंगिकता के कारण सामाजिक बहिष्कार और अकेलापन दिखाया गया है। फिल्म अलीगढ़ शहर (महानगरीय संदर्भ में) में LGBTQ+ अधिकारों और अलगाव को उजागर करती है। 'बधाई दो' (2022) और 'शुभ मंगल सावधान' (2017) में भी ऐसे मुद्दे हैं।

अपराध और नैतिक पतन:

'सेक्रेड गेम्स' (2018, नेटफ्लिक्स) मुंबई के अंडरवर्ल्ड, अपराध, भ्रष्टाचार और नैतिक पतन को चित्रित करती है। 'मिर्जापुर' और 'पेटा' जैसी सीरीज में शहरी अपराध और पावर गेम्स दिखते हैं। 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' (2012) में भी अपराध की जड़ें शहरी-ग्रामीण संघर्ष में हैं।

निष्कर्ष:

21वीं सदी का हिंदी सिनेमा महानगरीय समस्याओं को यथार्थवादी ढंग से चित्रित कर वैश्विक स्तर पर भारतीय

समाज की सच्चाई दिखाता है। ओटीटी ने विविधता बढ़ाई, जबकि फिल्में जैसे 'गली बॉय', 'पिंक', 'अलीगढ़' और 'तारे ज़मीन पर' ने सामाजिक बदलाव की प्रेरणा दी। सिनेमा अब केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि विमर्श का मंच है, जो महानगरों की चुनौतियों पर प्रकाश डालता है और समाधान की दिशा दिखाता है। भविष्य में यह प्रवृत्ति और मजबूत होगी।

संदर्भ:

1. 21 वीं सदी की चुनौतियाँ और साहित्य-सृजन - Charans.org.
2. इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक की हिंदी कविता और महानगरीय बोध - aiirjournal.com.
3. इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में चित्रित महानगरीय बोध- ignited.in.
4. महानगर और आधुनिक हिंदी साहित्य: संघर्ष, चेतना और पहचान - aksharasurya.com.
5. (PDF) इक्कीसवीं सदी में हिंदी साहित्य: स्थिति एवं संभावनाएं- ResearchGate.
6. शोध आलेख: डॉ. सत्यनारायण के कथेतर साहित्य में महानगरीय बोध- apnimaati.com.
7. इक्कीसवीं सदी में हिंदी कहानी: स्वरूप, प्रवृत्तियाँ और सामाजिक चेतना - ijlpr.com.
8. इक्कीसवीं सदी के हिंदी साहित्य में- सामाजिक एवं सांस्कृतिक संदर्भ- shabdpravah.page.
9. 21वीं सदी में हिन्दी सिनेमा और बाजार- inspirajournals.com.
10. इक्कीसवीं सदी का हिन्दी सिनेमा और स्त्री दर्पण की झलक - hindi.uok.edu.in.



11. 21वीं सदी के हिंदी सिनेमा के विविध आयाम-
14.139.228.232.
12. हिंदी सिनेमा और उसका अध्ययन: यूनिट-2-
hansrajcollege.ac.in.
13. शोध आलेख: हिंदी बाल सिनेमा और बाल समस्याएं -
apnimaati.com.
14. 21वीं सदी में हिंदी सिनेमा की नायिकाएँ-
ResearchGate.
15. 21वीं सदी के 21वें साल में हिन्दी सिनेमा-
2tookbol.com.
16. सामाजिक द्वंद्व के ऐतिहासिक निरीक्षण का भारतीय
सिनेमा में - ijnrd.org.
17. नव उदारवाद भारत की नयी हिंदी सिनेमा पर केंद्रित एक
नयी पुस्तक - navbharattimes.indiatimes.com.
18. भारतीय सिनेमा का इतिहास और विभिन्न पुरस्कार -
drishtiiias.com.
19. Hindi Cinema and Society: A study on the
perception of Indian youth - jcoma.com.
20. हिन्दी सिनेमा और बदलता हुआ भारतीय समाज -
multisubjectjournal.com.
21. पद्मावत: 21वीं सदी में 12वीं सदी की अज्ञानता फैलाने
वाली फिल्म - hindi.newsland.com.
22. Writers bemoan a lost way of life in cities,
in rural areas - countercurrents.org.
23. The Rise of Modern Hindi Literature -
isahityam.com.
24. Indian Novel in the 21st Century -
oxfordre.com.
25. 21st Century Perspectives on Indian Writing
in English - modernliterature.org.
26. The First Decade of the 21st Century and
the Hindi Novel - theacademic.in.
27. Exploring the Literary Urban Imagination in
India - journal.sijss.com.
28. Ecologies of Resistance: Environmental
Consciousness in 21st Century Indian
English Novels - iajesm.com.
29. 20 Dazzling Diamonds: Best of Hindi
Novels in the 21st Century -
kavyapublications.com.
30. Territorial Conflicts in the Contemporary
Indian Novel in English
journals.openedition.org.
31. In Print: 'Screening Precarity: Hindi Cinema
and Neoliberal Crisis in Twenty-First
Century India' - purdue.edu.
32. Screening Precarity: Hindi Cinema and
Neoliberal Crisis in Twenty-first Century
India - jstor.org.
33. A Vision of Modern India: Social Messages
and Commodity Culture in New Bollywood
- post.moma.org.
34. How has Hindi cinema across decades
reflected and shaped the shifting social
choices - medium.com.



35. Society still thinks people from the Chharra community are criminals - frontline.thehindu.com.
36. Hindi Cinema and Neoliberal Crisis in Twenty-first Century India - fulcrum.org.
37. The struggle to belong Dealing with diversity in 21 century urban settings - rc21.org.
38. A 'tidal change' in Bollywood: How the world's largest film industry veered to the right - kvoa.com.
39. Bollywood's Blockbusters: The Rise of the Indian Multiplex Theater and its Impacts - mediapolisjournal.com.